ध्येय गीत

माल्यार्थ है
लोक के कल्याण की,
साधना की परम्परा ।।

भाव और तकनीक का, यह संयुक्त उपक्रम ।
उन्नति का आधार है निष्ठा और परिश्रम ।
ज्ञान और विज्ञानाधारित संस्कृति का बल-विक्रम ।
दूर करेगा तन का, मन का, जीवन का हर संभ्रम ।
माल्यार्थ है,
बहुमुखी सामर्थ्य की
कामना की परम्परा ।।

स्वास्थ्य, कला, साहित्य के विहित समर्पण वाला ।
स्नेहाशीषों की पहन मंजु मालती-माला ।।
सद्वैचारिकता को जिसने सक्रियता में ढाला ।
शिक्षा का, गुण-कौशल का गुरुद्वारा और शिवाला ।।
माल्यार्थ है,
सतयुगी सहयोग की
भावना की परम्परा ।।

सिखलाता संघर्ष में खूब तपाना, तपना ।
पर, न सिखाता है कभी, छल की माला जपना ।
व्यसन, प्रदूषण-मुक्त, स्वावलम्बी हो भारत अपना ।
कदम मिलाकर चलें आँजकर ,सभी, दृगों में सपना ।।
माल्यार्थ है,
सत्पथी कर्त्तव्य की,
धारणा की परम्परा ।।

सब में नैतिक बल रहे, बहे प्रेम की धारा ।
स्वच्छ, सकारात्मक, सरस, हो मन का गलियारा ।
नर-नारी जाग्रत, सशक्त हों, यही प्रयास हमारा ।
फाउण्डेशन जन-गण-मन को देगा सबल सहारा ।
माल्यार्थ है,
नव्यतम उत्कर्ष की
योजना की परम्परा ।।

रचयिता : आचार्य देवेन्द्र देव
मुख्य संरक्षक, माल्यार्थ फाउण्डेशन